प्रभु ने पार किया परिस्थितियों से

मेरा जन्म एक साधारण परिवार में हुआ। बचपन में माँ दुर्गा की पूजा किया करती थी व नवरात्रों में पूरे नौ दिन व्रत रखती थी। एक बार घर पर पिताजी ने सुन्दरकांड का पाठ रखवाया था। किसी ब्रह्माकुमार भाई ने आकर ब्रह्माकुमारी आश्रम का परिचय दिया। अगले दिन से ही पिताजी ने जाना शुरू कर दिया। पन्द्रह दिन के बाद वे हमें भी मोदीनगर के आश्रम पर ले गये। वहाँ ब्रह्माभोजन रखा गया था। ब्रह्माभोजन खाने को कहा गया तो मैंने मना कर दिया क्योंकि मेरे नवरात्रों के व्रत चल रहे थे। घर वापिस आने के बाद 10 बजे मैंने व्रत वाला भोजन खाया। उस समय मेरी आयु 12 साल की थी। दीदी ने मुझे अगले दिन आश्रम पर बुलाया और कहा, **तुम तो देवी हो और देवी, देवी के व्रत नहीं रख सकती। यह बात दिल को लग गयी। तभी से भोजन का व्रत नहीं बल्कि ब्रह्मचर्य व्रत रखने का संकल्प लिया।** फिर रोज़ आश्रम जाती और बाबा की मुरली सुनकर आती।

जब इंसान जीवन में आगे बढ़ता है तो परिस्थितियाँ भी सामना करती हैं। अचानक मेरी आंखों से पानी गिरना शुरू हो गया, दर्द भी होने लगा। फिर दृष्टि में धुंधलापन आने लगा और आंखों की रोशनी नाम मात्र रह गई, केवल एक कदम दूरी तक का देख सकती थी। माताजी बीमार रहते थे इसलिए मैंने आँखों की समस्या उन्हें नहीं बताई। विद्यालय में मास्टरजी जो पढ़ाते थे, बोर्ड पर लिखते थे, वह दिखाई नहीं देता था जिस कारण गृहकार्य कर नहीं पाती थी। मास्टरजी ने माता-पिता को सारी जानकारी दी। उसके पश्चात् आंखों की जाँच करवाई तो पता चला कि पाँच प्वाइंट का चश्मा भी काम नहीं कर रहा है। फिर दो साल तक इलाज चलता रहा। डॉक्टरों ने कहा, आँखों का व्यायाम करो तो रोशनी आ जायेगी लेकिन सब कुछ करने के बाद भी कुछ भी आराम नहीं आया।

सन् 2000 में मैं बाबा से मिलने आबू आई। मैंने पाण्डव भवन में बाबा की झोपड़ी में बैठकर बाबा को कहा, बाबा, अगर आँखों में रोशनी नहीं आई तो यह जीवन समाप्त कर दूँगी क्योंकि अगर मैं शादी करूँगी तो सब कहेंगे कि यह अंधी आ गई है और आप का बनकर यदि आपके महावाक्यों को ही नहीं पढ़ सकती तो मैं किस काम की। यह संकल्प बाबा के सामने रखकर मैं वापस आ गयी। एक दिन मैं और पिताजी कहीं जा रहे थे तो गजरौला में एक हॉस्पिटल पर हमारी नज़र पड़ी। वहाँ जाते ही मुझे और पिताजी को लगा कि यहाँ आँखें ठीक हो जायेंगी। निमित्त होम्योपैथिक डॉक्टर बहन ने कहा, तीन महीने में आँखें ठीक हो जायेंगी। सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। इलाज लगातार छह महीने तक चला लेकिन कुछ भी आराम नहीं आया। हताश होकर मैंने डॉक्टर बहन को कह दिया कि आज के बाद आपके पास दवाई लेने नहीं आऊँगी। उस रात मैं बाबा के सामने बैठ गई और बाबा को कह दिया, अलविदा बाबा। बस, यह अन्तिम मिलन है मेरा और आपका। मैं बहुत रो भी रही थी और बाबा से कह भी रही थी। तभी बाबा ने बहुत सुन्दर अनुभूति करवायी। बाबा ने मेरे पीछे खड़े होकर बड़े प्यार से तीन बार आंखों पर हाथ फिराया। मैं कुछ भी समझ नहीं पाई कि बाबा मेरे से क्या कहना चाहते हैं। अगले दिन सुबह तीन बजे बाबा ने कहा, बच्ची, रोना नहीं। बाबा से वायदा किया है तो बाबा पूरी मदद करेगा, उसी डॉक्टर बहन के पास जाओ, बाबा उसे टच करेगा। बाबा सच में मुझसे बातें कर रहे थे। समय होते ही मैं फिर से उसी डॉक्टर बहन के

पास गई तो उन्होंने मुझे देखते ही गले से लगा लिया और कहा कि मुझे भी अन्त: प्रेरणा आई है, मैं आपकी दवाई बदलूँगी, मुझे मेरे पिता की बताई हुई एक दवाई याद आई है जिसके बारे में मैंने सोचा भी नहीं था। फिर जो दवाई मुझे दी गई उससे तीन दिन में ही आराम आना शुरू हो गया। तीन महीने दवाई खाने के बाद मेरी आंखें बिलकुल ठीक हो गईं। बाबा करनकरावनहार है, किसी को भी निमित्त बनाकर अपना कार्य करा लेता है। मैंने फिर दृढ़ संकल्प किया कि मुझे बाबा के घर ही रहना है।

मैं एक महीने के लिए अपनी एक सखी के साथ गुड़गाँव सेन्टर पर आई। एक मास के बजाय मैं सात मास तक सेन्टर पर ही रही। फिर समाचार मिला कि माताजी की तबीयत ज्यादा खराब हो गई है तो मुझे लौकिक घर जाना पड़ा। एक महीना माताजी की अच्छी तरह सेवा की। सन् 2002 में उन्होंने अपना पुराना शरीर छोड़ दिया। मुझे माता जी से बहुत लगाव था पर उस समय बाबा ने मेरे में वो शक्ति भर दी जो कभी सोचा भी नहीं था। जब मैं रोती थी तो मुझे लगता था कि बाबा मेरे आँसुओं को पोंछ रहा है। फिर मैं हलकी हो जाती थी। छोटे भाई-बहनों (तीन बहनें, एक भाई) ने मुझे आश्रम पर जाने से मना कर दिया और कहा, माताजी के स्थान पर अब आप ही हमारी देखभाल करो। मैं घर में सबसे बड़ी हूँ। मैंने भी सोच लिया कि अब मैं नहीं जाऊँगी। तीन महीने बाद छोटे बहन-भाइयों ने मुझे छुट्टी दे दी। मैं वापिस आश्रम पर आ गई। पाँच साल से मैं सेवाकेन्द्र पर सेवा दे रही हूँ। बाबा ने छोटी उम्र में मुझे उन बड़ी परिस्थितियों से पार निकाला है जिनसे पार होना मेरे लिए असम्भव था। बाबा का शुक्रिया करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। दिल यह कहता है –

तेरी आंखों के सिवा
दुनिया में रखा क्या है?
ये उठें, सुबह चले,
ये झुकें, शाम ढले।
मेरा जीना, मेरा मरना
इन्हीं पलकों के तले।।

परमात्म-आह्वान

– ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क (दिल्ली)

आध्यात्मिकता में ही रक्षा, हैं बाकी बंधन,
है दिव्यता में छिपी मुस्कान, शेष तो क्रन्दन ;
है परमात्म शक्ति ही सच्ची रक्षक,
समझ लो बाकी तो सब समूल भक्षक ;
आओ सुनो ! अन्तर्मुखता से, कह रहा कौन बारम्बार
स्वयं भू हुआ अवतरित, महिमा जिसकी अपरमपार ;
बंद करो सारे यंत्र नाकाम, आयेगा मंत्र कोई न काम ;
वरद् हस्त परमात्म शक्ति का, भासेगा सरे आम ;
धरे रह जायेंगे तंत्र और सारे तामझाम,
सुनो ! यह आवाज़ करेंगे, वाकिफ वक्त के राज़।
काम आयेगा तो केवल संचित आध्यात्मिक सशक्तिकरण
सोच लो, समझ लो, बढ़ा लो शुभ संकल्प की कलाई।
है निहित तेरा हित, इसी में आत्मन् ! तेरी भलाई।।
हो प्रबुद्ध, न कर युद्ध, ले स्वच्छ श्वास, रूहानी मैदान में आ
त्याग स्वार्थ, परमार्थ, शुभकामना की मशाल जला
रोशन कर ज़माना, कमाले सत्य खज़ाना
बाँध ले मन गाँठ, श्रेष्ठ कर्म भूल न जाना
आध्यात्मिकता में ही रक्षा, हैं बाकी सब बंधन
है परमात्म सशक्तिकरण में सच्चा रक्षा बंधन।